International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(3): 66-67

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(3): 66-67
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-03-2018
Accepted: 14-04-2018

सुशील कुमार सिंह
शोधछात्र, समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

Correspondence
सुशील कुमार सिंह
शोधछात्र, समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

नेत्रहीन विद्यार्थियों के आवागमन की समस्याएं

सुशील कुमार सिंह

नेत्रहीनता के अभाव में नेत्रहीन का भौतिक वातावरण से तथा कुछ हद तक सामाजिक वातावरण से भी अलगाव हो जाता है। एक सामान्य व्यक्ति किसी भी वातावरण में सभी वस्तुओं को एक ही नजर में देख लेता है। इसके विपरीत नेत्रहीन के साथ ऐसा नहीं होता, वह वस्तु को भी हिस्सों में देखता है। एक नेत्रहीन बालक जलती हुई वस्तु की महक अनुभव कर सकता है किन्तु तत्काल उसे इस महक के कारण का पता नहीं चलता। इसकी वजह से नेत्रहीन में कारण जानने की जिज्ञासा रहती है बल्कि उसे चिन्ता भी तब तक रहती है जब तक कि कोई उस नेत्रहीन को कारण की जानकारी न दे दे।[1]

– डॉ. सुदीप कुमार दुबे

प्रस्तावना

एक नेत्रहीन व्यक्ति के लिए जीवन हर समय उसके समक्ष एक नई चुनौती प्रस्तुत करता है। यदि जन्म से नेत्रहीन है तो समस्या अपेक्षाकृत सरल है अन्यथा जन्म के उपरान्त नेत्रहीन की नेत्रहीनता उसके समायोजन प्रक्रिया में बहुत जटिल हो जाती है।[2] प्रायः जिन व्यक्तियों को देखने में समस्या होती है अथवा जो पूर्णतः नेत्रहीन होते हैं उन्हें चलने फिरने में समस्या आती है। परिचित वातावरण की तुलना में अपरिचित वातावरण में यह समस्या बढ़ जाती है।[3]

नेत्रहीन को उनके व्यक्तिगत कार्य करने के लिए प्रेरित करना उनकी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। सामान्यतया व्यक्ति के घर का कोई सदस्य उसे पाठशाला तक छोड़ता तथा शाम को वापस घर ले आता है। घरों तथा पाठशालाओं में नेत्रहीन बच्चों को कोने में बैठा दिया जाता है, परिणामस्वरूप उसे दिशा ज्ञान नहीं मिल पाता है तथा वे स्वाबलम्बी नहीं बन पाते।[4]

नेत्रहीनता व्यक्ति के जीवन पर जो सीमाएं अध्यारोपित करती है उनमें एक प्रमुख क्षेत्र चलने–फिरने की क्षमता का है। नेत्रहीन व्यक्ति अकेले चलने में असुरक्षित अनुभव करता है तथा ऐसा सम्भव नहीं कि हर समय कोई मित्र अथवा पारिवारिक सदस्य सहायता के लिये उपलब्ध हो।[5]

अध्ययन विधिः

प्रस्तुत अध्यय रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) एवं इससे संबंधित शिक्षण केन्द्र में अध्ययनरत कुल नेत्रहीन विद्यार्थियों की संख्या 128 तथा अध्ययन हेतु 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के आधार पर किया गया जिसमें 64 नेत्रहीन विद्यार्थियों के आवागमन की समस्याओं को ज्ञात करना अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है।

अध्ययन का उद्देश्यः

1. आवागमन के दौरान नेत्रहीन विद्यार्थियों के सामने आने वाली समस्या को ज्ञात करना।

अकेले आवागमन करने पर चुनौति सम्बन्धी विवरण

ज्ञान अर्जन सम्बन्धित	आवृत्ति	प्रतिशत
बस स्टॉप तक पहुँचना	14	21.87
ऑटो रिक्शा तलाश करना	12	18.76
रोड क्रॉस करना	14	21.87
रास्ता पूछना	16	25.00
अन्य	08	12.50
योग	64	100.00

उपरोक्त अध्ययन हेतु उत्तरदाताओं से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया कि अकेले आवागमन करने पर आपके सामने किस प्रकार की समस्याएं आती है। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार 1/4 भाग अर्थात् 25 प्रतिषत उत्तरदाताओं ने बताया कि अकेले आवागमन करने पर उन्हें रास्ता पूछने की समस्या सबसे बड़ी समस्या लगती है। जबकि बस स्टॉप तक पहुँचना एवं रोड क्रॉस करने की समस्या का सामना करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या में समानता पाई गई है जो 21.87 प्रतिशत स्पश्ट है। जबकि 18.76 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है उन्हें ऑटो रिक्शा तलाश करना उन्हें आवागमन की मुख्य समस्या लगती है। जबकि 6.26 प्रतिशत कम 12.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं को आवागमन के दौरान अन्य तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन इस अन्य प्रकार की समस्याओं को पूछने पर उत्तरदाताओं ने किसी विशेष प्रकार की समस्या का उल्लेख नहीं किया है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन में अकेले आवागमन करने पर अधिकतम उत्तरदाताओं को रास्ता पूछने की समस्या का सामना करना पड़ता है।

अकेले आवागमन करने पर किराये देने हेतु रूपये की पहँचान संबंधी विवरण

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
किसी से पूछकर किराया देते हैं	20	31.25
नोट व सिक्कों के स्पर्श से पहचानते हैं	19	29.68
घर से निकलने के पूर्व नोट व सिक्के अलग रखते हैं	10	15.62
अनुभव से किराया देते हैं	13	20.33
अन्य	02	3.12
योग	64	100.00

उत्तरदाताओं से यह ज्ञात करने हेतु पूछा गया कि अकेले आवागमन करने पर आप किराये देने के लिए रूपये की पहचान किस प्रकार से करते हैं। एक तिहाई से कम 31.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वह रूपये को किसी से पूछकर निर्धारित किराया देते हैं। जबकि 1.57 प्रतिशत कम 29.68 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि किराया देने हेतु वह स्वयं नोट व सिक्कों के स्पर्श से रूपयों को पहचानते हैं फिर किराया देते हैं। इसी प्रकार अनुभव से किराया देने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 20.33 प्रतिशत जो घर से निकलने के पूर्व नोट व सिक्के अलग रखने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 15.62 प्रतिशत से 4.71 प्रतिशत अधिक परिलक्षित होती है। जबकि 3.12 प्रतिशत उत्तरदाता किराया देने के लिए रूपये की पहचान अन्य प्रकार से करते हैं रूपये की पहचान के संदर्भ में पूछने पर उत्तरदाताओं ने किसी विशेष अन्य प्रकार का उल्लेख नहीं किया।

अतः प्रस्तुत अध्ययन में किसी से पूछकर किराया देने वाले उत्तरदाताओं की संख्या आधिक्य है।

निष्कर्षः

प्रस्तुत अध्ययन नेत्रहीन विद्यार्थियों के आवागमन की समस्याएँ के संदर्भ में किया गया है। एक नेत्रहीन मानव संसार की समस्त प्रकार की जानकारी को प्राप्त करने की इच्छा रखता है परन्तु नेत्रहीनता एक अभिशाप की तरह उसके जीवन में प्रत्येक स्थान तथा क्षण में उपस्थित रहता है, पर इन सभी प्रकार की समस्याओं का सामना करके नेत्रहीन विद्यार्थी अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में अटल, दृढ़–निश्चय रहता है जिससे अपना जीवन–यापन सरलता से कर सकें।

सुझावः

समाज में निवास कर रहे नेत्रहीन व्यक्तियों को बिना किसी की सहायता के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिये अर्थात् उन्हें सुरक्षित आवागमन प्रदान करने के लिए उन्हें उचित प्रतिशक्षण देना चाहिए।

1. दिशा ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए।
2. घर के बाहर एक निश्चित स्थान पर ब्रेल लिपि में लिखा जाना चाहिए जिससे नेत्रहीन विद्यार्थी अपने गन्तव्य पर बिना किसी से रास्ता पूछे पहुँच सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. दृश्टिबाधित विद्यार्थियों की समस्याएँ और उनके लिए सुझाव – डॉ. सुदीप कुमार दुबे, 2014, कनिश्ठ पब्लिशर्स, नई दिल्ली
2. Visual Impairment Handbook: Blind People's Association – B. Punnani and N. Rawal, Ahmedabad, 2009.
3. See with the Blind – Fernandez, G. Koeling, C. Mani, M.N.G. and Tensi. Banglore: Books for Change.
4. Education of Exceptional Children - R.N. Das, Ajanta Publication, New Delhi, 1990.
5. Socially Deprived Children – S.P. Anand, REC Bhureshwar, 1982.